श्लोक नं॰ 21

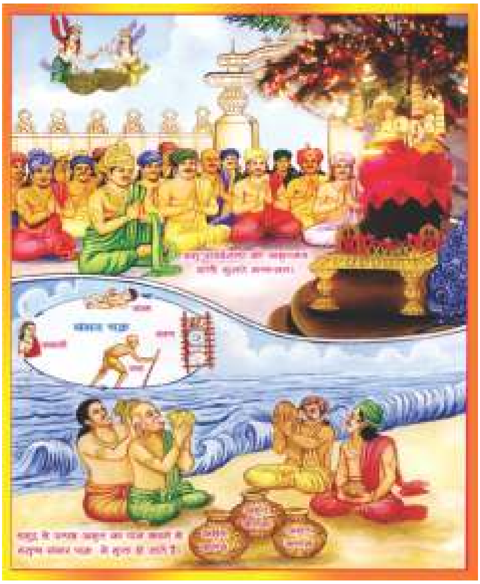

दिव्यध्वनि प्रातिहार्य

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवाया:
पीयूषतां तव गिर:समुदीरयन्ति।
पीत्वा यत:परम-सम्मद-संग-भाजो
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्॥21॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

गुरु गम्भीर हृदय समुद्र से निकली दिव्यध्वनि।
जिनवाणी अमृत समान है कहते ऋषि मुनि॥
लोककथा है अमृत निकला गहरे सागर से।
देवों ने जब पिया उसे कहलाए अमर तब से॥
सत्यकथा तो यह है जिसने जिनवच अमिय पिया।
अजर-अमर अविनाशी पद को उसने वरण किया॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 21॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं।

दृष्टिविषर्द्धियोगीन्द्रान्, सर्वकोपातिगान् क्षमान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चौपाई

1. **स्थापन करूँ पार्श्व जिनरायी, हृदय कमल बसिए शिवदायी।**
मैं लघु भक्त आपका स्वामी, आप महासागर गुणधामी॥1121॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **नेता हो प्रभु त्रय लोकों के, तिमिर मिटाते भवि जीवों के।**
मुझको भी तव शरण मिली है, सम्यक्ज्ञान सु-ज्योति जली है॥1122॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **गमन कहीं ना करते स्वामी, सुथिर हुए शाश्वत शिवधामी।**
मेरा चंचल मन थिर करिए, अरज करूँ भव-दुख प्रभु हरिए॥1123॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **भीषण राग-द्वेष की ज्वाला, जलकर आत्म हुआ मम काला।**
मन्त्र मुझे दो आग बुझाऊँ, शीतल क्षमा भाव प्रकटाऊँ॥1124॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **रसिक भक्त यह तव दर्शन का, अपलक निरखूँ मुख जिनवर का।**
नहीं आप-सा कोई धरा पर, पार्श्वनाथ जिन सर्व प्रियङ्कर॥1125॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **हृदयेश्वर भक्तों के तुम ही, सर्व विघ्न संकटहर तुम ही।**
मनवाञ्छित दाता हो तुम ही, मेरे तो सब कुछ हो तुम ही॥ 1126॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **दलन किया है दुर्भावों का, हनन किया है वसु कर्मों का।**
महा पराक्रम के प्रभु धारी, धन्य-धन्य जिनवर त्रिपुरारि॥ 1127॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **योजन सवा समवसृति राजे, अधरासन पर प्रभु विराजे।**
जब प्रभु को श्रद्धा से ध्याते, बन्द नयन में दर्शन पाते॥ 1128॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. **दशा भक्त की आप सुधारो, सही दिशा में आप चलाओ।**
मैं अबोध बालक हूँ स्वामी, दया करो हे अन्तर्यामी॥ 1129॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **धिक्कारूँ निज दुष्परिणतियाँ, खोलूँ अन्तर्मन की अँखियाँ।**
मुझे मिले जब पारस जिनवर, क्यों भटकूँ औरों के दर पर॥ 1130॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **सम्भव सारे कारज होते, आत्म ध्यान से विधिमल धोते।**
जो प्रभु वचनामृत पीते हैं, अजर-अमर होकर जीते हैं॥ 1131॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **भजन आपका जो करता है, वह इक दिन भगवन् बनता है।**
अतः भक्ति वश भजन करूँगा, मनवाञ्छित वर शीघ्र वरूँगा॥ 1132॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **वाग्गङ्गा निकली जिन मुख से, जो पीता वह जीता सुख से।**
अमर बनाती प्रभु की वाणी, सर्व हितङ्कर जग कल्याणी॥ 1133॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **मुख्याः तीन भुवनपति नमते, पार्श्व चरण में अर्चन करते।**
बड़भागी को प्रभु-दर भाता, श्रद्धा से वह शीश झुकाता॥ 1134॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **पीछे-पीछे बन अनुगामी, चलूँ आपके पथ पर स्वामी।**
विभाव से मैं भटक चुका हूँ, घूम-घूम कर बहुत थका हूँ॥ 1135॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. **मयूर मन का नाच उठा है, जब जिनवर का दर्श हुआ है।**
प्रभु समीप मन प्रसन्न रहता, बढ़ जाती है अन्तर क्षमता॥ 1136॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. षट् द्रव्यों में जीव मुख्य है, जिनवर पाते अतुल सौख्य है।
पार्श्वप्रभु उपसर्ग विजेता, निराकार हो सुधर्म नेता॥1137॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तांत्रिक पार्श्व नाम यदि जपता,तन्त्र कार्य को निश्चित तजता।
मन विशुद्ध कर शान्ति पाता, रत्नत्रय पा शिवपुर जाता॥1138॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तमनाशक प्रभु को मम वन्दन, जीवन कर लूँ उन्हें समर्पण।
मेरे भाव विशुद्ध बना दो, दुखिया हूँ मैं सौख्य घना दो॥ 1139॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वस्तु स्वरूप बताने वाले, सम्यक्ज्ञान कराने वाले।
बारह सभा समझ जाती हैं, दिव्यध्वनि सुन हर्षाती है॥ 1140॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. गिर-गिर कर मैं सँभल रहा हूँ, नाम आपका सुमर रहा हूँ।
आप दयालु दया करोगे, है विश्वास न ठुकराओगे॥ 1141॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. गिरः[1] आपकी जग उपकारी, नाथ आप भविजन हितकारी।
प्रभु चरणों में है बलिहारी, जिनसे ममता भी है हारी॥ 1142॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सर्व नन्त जाने जिनरायी, अकथ आप महिमा अतिशायी।
भगवन् कहते भाव सुधारो, रौद्र भाव ना मन में लाओ॥ 1143॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. मुद्रा जिनवर की मन भाए, बार-बार मन प्रभु दर आए।
तजकर कहाँ और मैं जाऊँ, तव पद का ही ध्यान लगाऊँ॥ 1144॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. वाणी

25. दीन-हीन क्यों बना हुआ हूँ, निज का भान भुला बैठा हूँ।
प्रभु कहते निज की सुध ले ले, निज शुद्धातम में ही रम ले॥ 1145॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रचा कर्म का जाल स्वयं ने, दु:ख भोगता फँसकर इसमें।
प्रभु-भक्ति कर जाल काट दे, गुरु कहते भव बन्ध तोड़ दे॥ 1146॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जयन्तु चौबीसी तीर्थेशा, दूर करें भव-भव के क्लेशा।
पार्श्वनाथ जिन संकटहारी, असंख्य तारे अब मम बारी ॥ 1147॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिरस्कार स्वातम का करके, कर्म शत्रु को मीत बना के।
आत्म निधि को लुटा चुका हूँ, आप द्वार आ नाथ रुका हूँ॥ 1148॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पी पीकर विषयों का प्याला, नन्त काल से बन मतवाला।
निजगृह जान नहीं पाया हूँ, अत: आपके दर आया हूँ॥ 1149॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सम्यक्त्वादिक वसु गुण धारे,अनन्त अवगुण आप निवारे।
स्वदेश को पाया है स्वामी, स्वीकारो वन्दन जगनामी॥ 1150॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. यहाँ-वहाँ मैं भटक चुका हूँ, लख चौरासी घूम चुका हूँ।
कहीं ठिकाना मिला नहीं है, आप शरण में शान्ति मिली है॥ 1151॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. स्वत: दुखी हूँ राग भाव से, नाता जोड़ा वीतराग से।
है विश्वास न दुखी रहूँगा, अनन्त सुख को प्राप्त करूँगा॥ 1152॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. परवश होकर कभी न जीना, कहें प्रभु नित समरस पीना।
स्व-सम्मुख हो स्वातम ध्याओ,आओ निज चेतन गृह आओ॥ 1153॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रम्य वस्तु भी अरम्य लगती, उदय अशुभ प्रकृति जब रहती।
अशुभ भाव से बचना चाहूँ, दौड़-दौड़ प्रभु दर पर आऊँ॥ 1154॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मनमानी अब नहीं करूँगा, जिनवाणी को हृदय धरूँगा।
दिव्यध्वनि सद्राह बताए, भटकों को मुक्ती पहुँचाए॥ 1155॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. सम्मुख जब-जब प्रभु के आता,जग को भूल-भूल मैं जाता।
नाथ आपके छवि के जैसी, और न कोई जग में ऐसी॥ 1156॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मद माया से दूर हुए हैं, सुख स्वभाव से पूर हुए हैं।
ऐसे पार्श्वप्रभु को वन्दूँ, तीन योग से मैं अभिनन्दूँ॥ 1157॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दया दान का पाठ सिखाया, प्यासे को वच अमिय पिलाया।
अनुपम करुणा के सागर हो, पार्श्वनाथ गुण रत्नाकर हो॥ 1158॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. संघर्षों में समता धारी, आखिर कमठासुर मति हारी।
आनन्दामृत पीते रहते, सिद्धों की बस्ती में रमते॥ 1159॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. गलती की जो पूर्व काल में, पछताता हूँ नाथ आज मैं।
सब दोषों को पूर्ण नशाने, आया हूँ प्रभु अर्घ्य चढ़ाने॥ 1160॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भाग्य-विधाता हो भक्तों के, सत्पथ दर्शक हो भव्यों के।
पार्श्वप्रभु मम अरजी सुनिए, मेरे भी मन मन्दिर बसिए॥ 1161॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. **जो** भी नाथ आपको ध्याए, उनके सारे विघ्न नशाए।
कर्त्तापन से रहित जिनेश्वर, फिर भी तार दिए अनगिन नर॥ 1162॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. **भ**व संतति मिट जाए सारी, अब तक सही आपदा भारी।
विभाव निज को ही दुख देते, अतः आपके गुण हम गाते॥ 1163॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. **व्या**धि आधि सब दुखदायी हैं, मरण-समाधि सुखदायी है।
चिन्मय देश मुझे भी पाना, धारूँ भेष दिगम्बर बाना॥ 1164॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. **व्र**त पालन करके जिनराया, शाश्वत मोक्षमहल को पाया।
अनन्त गुण से कक्ष सजा है, पाया प्रभु ने सौख्य घना है॥ 1165॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. **जन्**म जरादिक क्षय करने को, जल लाया पद में अर्पण को।
निजानुभव का अमृत पाने, आया हूँ प्रभु-भक्ति करने॥ 1166॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. **ति**लक लगाने से क्या होगा, मात्र क्रिया से मोक्ष न होगा।
द्रव्य भाव संयुत पुरुषार्थी, होते हैं भविजन परमार्थी॥ 1167॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. **त**रह-तरह के व्यञ्जन खाए, किन्तु क्षुधा को मिटा न पाए।
जिनवच अमृत मुझे पिला दो, नन्त काल तक मुझे जिला दो॥ 1168॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. **र**क्षक भी भक्षक बन जाता, कर्म असाता फल जब देता।
मित्र अरि हो जाते सारे, एकमात्र प्रभु आप सहारे॥ 1169॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. **सा**रभूत जिनधर्म हमारा, जिसने नन्त जीव को तारा।
जिसने जिनवर की शरणा ली, उनने मुक्तिललना वर ली॥ 1170॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. प्राप्य मोक्ष सुख लक्ष्य हमारा, पाना है भव-सिन्धु किनारा।
विषय लहर में अब ना बहना, कहा आपने जो वह करना॥ 1171॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. जडधी हूँ मुझको बुद्धि दो, स्वात्म दर्श की उपलब्धि हो।
लौट कभी न जग में आऊँ, अतः प्रभु जी अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1172॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. राजा भी तव द्वारे आते, हीरा माणिक मोती लाते।
अर्घ्य चढ़ा आनन्दित होते, पाप कर्ममल को वे धोते॥ 1173॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मनमर्कट अति चंचल मेरा, कैसे नाशूँ भव का फेरा।
इस मन को जिनवर समझा दो, भूला हूँ शिवमग दिखला दो॥ 1174॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रत्नाकर कहलाते स्वामी, अव्यय अविनाशी गुणधामी।
मुझको अपने धाम बुला लो, भव संकट से मुझे बचा लो॥ 1175॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. शिवं शुद्ध बुद्धं जिनराजा, मोक्षमहल के तुम हो राजा।
मैं लघु भक्त तिहारा स्वामी, हृदय बसो मम अन्तर्यामी॥ 1176॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

ज्यों अमृत निकला सागर से, पिया सुरों ने हुए अमर वे।
यह तो केवल लोककथा है, जिनवच पीकर मिटी व्यथा है॥
हृदयोदधि से निकली वाणी, अमृत सम कहते ऋषि ज्ञानी।
दिव्यध्वनि को उर में धर लूँ, अर्घ्य चढ़ा प्रभु वन्दन कर लूँ॥ 21॥

ॐ ह्रीं श्रीं दिव्यध्वनिविराजिताय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 22

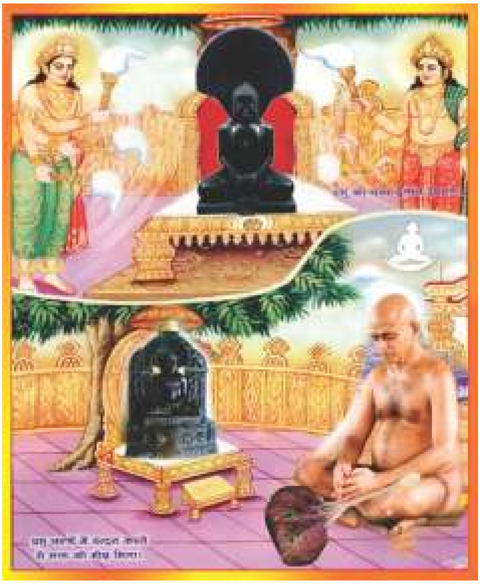

चँवर प्रातिहार्य

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुङ्गवाय
ते नूनमूर्ध्व-गतयःखलु शुद्ध-भावाः॥ 22॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

सुरगण द्वारा नाथ आप पर ढुरे चँवर सुन्दर।
पहले नीचे जाते हैं ये फिर जाते ऊपर॥
मानो ये कहते जन-जन को प्रभु-पद नमन करो।
शुद्ध भाव कर ऊर्ध्व गति से शिव में गमन करो॥
चौंसठ ऋद्धि के प्रतीक ये स्वच्छ चँवर मनहार।
चँवर ढुराते सुरगण बोले प्रभु की जय-जयकार॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 22॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं।

गृहीततपसोऽत्यक्तान्, मुनीनुग्रतपोयुतान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 22॥

ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **स्वाहा करके कर्म की, हो जाऊँ निष्कर्म।**
प्रकट करूँ निज नन्त गुण, पाऊँ स्वातम धर्म॥1177॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **स्वामिन् सुनिए प्रार्थना, अरज करे सद् भक्त।**
रुचि जगाकर मोक्ष की, करिए भव से मुक्त॥1178॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **सुध-बुध भूला स्वात्म की, पर के किए विकल्प।**
अतः रहा नित ही दुखी, बीत गए कई कल्प॥1179॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **दूध बने घृत सत्य है, घृत का दूध न होय।**
मुक्ती पाकर जगत में, आना कभी न होय॥1180॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **रजनीपति[1] लज्जित हुआ, देख प्रभु का तेज।**
सर्व कान्तिमय वस्तुएँ, तत्क्षण हुईं निस्तेज॥1181॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **मनोज्ञ मूरत देखकर, भविजन रहे पुकार।**
मात्र आपकी शरण है, करिए मम उद्धार॥1182॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **वसुन्धरा पुलकित हुई, पाकर प्रभु-सा लाल।**
विधान कर जिन पार्श्व का, भविजन हुए निहाल॥1183॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. चन्द्रमा

8. नयन प्रफुल्लित हो गए, निरख-निरख जिनराज।
पलकों का स्पन्दन रुका, तन रोमांचित आज॥1184॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. गम्य नहीं छद्मस्थ के, हूँ प्रभु मैं अनजान।
शरण प्राप्त कर आपकी, करूँ स्वात्म कल्याण॥1185॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. सम्यग्दृष्टि जीव को, मुक्ति का अधिकार।
अनन्त सम्यक्त्वी तिरे, अब है मेरी बार॥1186॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मुत्त द्रव्य मैं हूँ नहीं, अमूर्त आत्म स्वभाव।
यह चिन्तन कर विज्ञजन, तजते हैं परभाव॥1187॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. पल-पल में मन भागता, बाँधू भक्ति डोर।
आसपास प्रभु के रहूँ, होवे समकित भोर॥1188॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तन्मय होकर पूजते, जो जिन-पाद सदीव।
अनुभव कर वे स्वात्म का, पाते सौख्य अतीव॥1189॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. तोडूँ विधि बन्धन सभी, यही लक्ष्य दिन-रात।
पार्श्वप्रभु से अरज यही, हो आनन्द प्रभात॥1190॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मन्दिर प्रभु का स्वच्छ हो, करो न घर की बात।
प्रभु-गुण का चिन्तन करो, ध्यान करो या जाप॥1191॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ध्येय आप ही हैं प्रभु, करूँ आपका ध्यान।
निष्ठा से भरकर करूँ, अन्तर में गुणगान॥1192॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. वज्रवृषभ-नाराच शुभ, धरे संहनन आप।
ध्यान कुदाली से किया, कर्म-रिपु पर घात॥1193॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. दर्द दर्श के विरह का, सहा न जाए नाथ।
दे दो अब प्रत्यक्ष दर्श, अरज करे ये दास॥1194॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भ्रान्ति मिटी मिथ्यात्व की, जिन समीपता पाय।
कब मैं भी जिन सम बनूँ, ये ही आश लगाय॥1195॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. शुद्ध रूप उपयोग हो, धारूँ शुभ उपयोग।
जब तक मुक्ती ना मिले, हो न अशुभ उपयोग॥1196॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. चक्री भी तव चरण में, टेके अपना माथ।
क्योंकि जगत में आपसे, कोई बड़ा न नाथ॥1197॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. यः जो ध्यावे आपको, तीनों योग लगाय।
सब विभाव का ध्वन्स कर, भव-वन में ना आय॥1198॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सुयोग जिनवर का मिला, इक-इक पल अनमोल।
मुकुलित मन के द्वार को, हे चेतन अब खोल॥1199॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रहूँ साथ नित आपके, यही भक्त के भाव।
अपार भवदधि तैरने, जिनभक्ति ही नाव॥1200॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. चातक सम मैं भक्त हूँ, जिनवच श्यामल मेघ।
वचन सुधा बरसाइए, प्यासे भक्त अनेक॥1201॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मतलब का संसार है, कोई न देता साथ।
सुख में तो पूछे सभी, दुख में न आय पास॥1202॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रौद्र भाव से नरक जा, भोगे दु:ख अनेक।
धर्म्यध्यान अब कर सकूँ, दे दो नाथ विवेक॥1203॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. विघ्नौघा: क्षय प्राप्त हो, प्रभु स्तवन से शीघ्र।
अशुभ भावना ना रहे, हो उपयोग पवित्र॥1204॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घा:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. ये रागादि विनाश कर, वीतराग हो भाव।
गहन भवोदधि तिर सकूँ, बैठ चरित की नाव॥1205॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. अस्मै यानि पार्श्वजिन, सर्व जगत प्रियनाथ।
भक्तों की यह भावना, बने सिद्धि सम्राट्॥1206॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्मै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नत मस्तक होकर करूँ, दर्शन बारम्बार।
नाथ आपको देखकर, मिलता सौख्य अपार॥1207॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. गतिं चार को छोड़कर, पंचम गति वह पाय।
जिनकी मति प्रभु में लगी, कुमति सर्व विनशाय॥1208॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तिं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विश्वविज्ञ हो आप जिन, लोकालोक सु-ज्ञान।
वह जन तुमको जानते, जो धरते नित ध्यान॥1209॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. दर्श योग्य प्रभु आप हैं, देखूँ आत्म स्वभाव।
संसारी जन मलिन हैं, छोड़ूँ उनका साथ॥1210॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. धर्मायुध लेकर किया, विकार रिपु का ध्वन्स।
इतनी शक्ति दो मुझे, करूँ पाप विध्वन्स॥1211॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तेज देख प्रभु आपका, भानु भी शरमाय।
पश्चिम दिश में जा स्वयं, शीघ्र अस्त हो जाय॥1212॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मुहूर्त मानव जन्म का, शुभ स्वरूप ही जान।
कहें गुरु तू प्राप्त कर, दुर्लभ सम्यक्ज्ञान॥1213॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नियमित जो पूजन करे, तदुपरान्त गृह कार्य।
द्वादश तप करके लहे, पंचम गति वह आर्य॥1214॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. पुत्र पत्नी पैसा सभी, आत्म पतन के हेतु।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित, मोक्ष तत्त्व के सेतु॥1215॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. अङ्ग आठ सम्यक्त्व के, आठ ज्ञान के जान।
चारित तेरह विध धरें, बन जाएँ भगवान॥1216॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ङ्ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वाद्य बजाकर देवगण, अर्चन कर हर्षाय।
निज परिवार सहित सभी, नाचत ताल बजाय॥1217॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यम भी डरता नियम से, अत: नियम को धार।
जैनागम के वचन हैं, नरभव का यह सार॥1218॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तेजस्वी जिन वदन लख, शीश झुकाते भक्त।
प्रभु की महिमा है यही, होते भाव प्रशस्त॥1219॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अनूप उपमातीत हो, सर्व जीव से भिन्न।
पार्श्वनाथ तीर्थङ्करा, जाने तत्त्व विभिन्न॥1220॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नरभव धन्य किया प्रभो, पाकर चिन्मय देश।
यही भक्त के भाव हैं, कर्म रहे ना लेश॥1221॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मूर्च्छा रहे न आत्म में, यही हृदय से चाह।
निसङ्ग होकर चल सकूँ, मोक्षपुरी की राह॥1222॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मूर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. ध्वस्त किए दुष्कर्म के, सर्व अशुभ षड्यन्त्र।
पार्श्वप्रभु का नाम ही, अहो महा शुभ मन्त्र॥1223॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. गर्वित मन से दान दे, पाप बन्ध ही होय।
सहज भाव से दे यदि, विकार मल को धोय॥1224॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तत्त्वज्ञान बिन शून्य सब, धर्म क्रियाएँ रूढ़।
भाव शून्य निष्फल क्रिया, करता रहता मूढ़॥1225॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. धन्य: धन्य: कह रहे, सुर नभ से उच्चार।
आओ भविजन आ रहे, करके प्रभो विहार॥1226॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. खण्ड किए मिथ्यात्व के, तीन प्रथम ही बार।
पा समकित प्रथमोपशम, फिर संयम को धार॥1227॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. लुभा रही छवि भक्त को, देख रहा अनिमेष।
परम विज्ञ हैं आप जिन, पाया परम चिदेश॥1228॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. शुचितम आतम कर लिया, करके विधि विध्वन्स।
लक्ष्य यही है भक्त का, बन जाऊँ शिवकन्त॥1229॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. उद्धत मन माने नहीं, पर में दृष्टि लगाय।
मिला अभी तक कुछ नहीं, फिर क्यों आश लगाय॥1230॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भाव-भासना यदि नहीं, पढ़ ले शास्त्र हजार।
तोता रटन समान ही, जीवन है बेकार॥1231॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. भावाः त्रय विध शास्त्र में, शुद्ध शुभाशुभ जान।
भाव शुभाशुभ छोड़कर, होय शुद्ध गुणखान॥1232॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रतीक चौंसठ ऋद्धि के, चँवर ढुराते देव।
अर्घ्य चढ़ाऊँ चरण में, नमूँ-नमूँ जिनदेव॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीं सुरचामरविराजमानाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं० 23

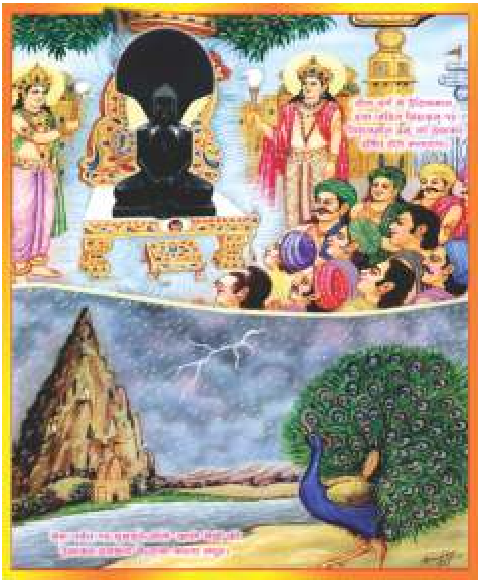

सिंहासन प्रातिहार्य

श्यामं गभीर- गिरमुज्ज्वल - हेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्य शिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्-
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्॥23॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

स्वर्ण सु-निर्मित रत्न जड़ित सिंहासन पर शोभे।
श्याम वर्णधारी पारस जिन भविजन मन मोहे॥
उपदेशामृत पिला रहे प्रभु ऐसे लगते हैं।
स्वर्ण मेरु पर कृष्ण मेघ ज्यों गर्जन करते हैं॥
काले बादल देख मयूर आनन्दित होता है।
सिंहासन पर प्रभु को लख मन हर्षित होता है॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 23॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं।

प्रदीप्ततपसा युक्तान्, भानुतेजोऽधिकप्रभान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

स्रग्विणी छन्द

1. श्याम वर्णी प्रभु तन की कान्ति महा।
भव्य जीवों के मिथ्या तमस को दहा॥
पार्श्व तीर्थेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य कल्याण मन्दिर को पढ़ता रहूँ॥ 1233॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मंदमति मैं करूँ कैसे भक्ति प्रभो।
भक्त निर्बल उसे दीजे शक्ति विभो॥ पार्श्व०॥ 1234॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. गन्ध रस वर्ण परसन[1] रहित आतमा।
स्वात्म सु-ज्ञान से होय परमातमा॥ पार्श्व०॥ 1235॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. भीतरी भाव से आत्म कल्याण हो।
प्राप्त हो शुद्ध भावों से शिवधाम को॥ पार्श्व०॥ 1236॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रज रहस्य रहित मोह अरि जीत कर।
हो गए आप पावन परम तीर्थंकर॥ पार्श्व०॥ 1237॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. गिरि सम्मेद तीर्थधरा शाश्वता।
सिद्धि पाते यहाँ से मुनि सर्वदा॥ पार्श्व०॥ 1238॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. रथ संयम का तैयार कर आपने।
कर सवारी गए नाथ शिवधाम में॥ पार्श्व०॥ 1239॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. स्पर्श

8. **मु**दित मन से करें अर्चना आपकी।
तोड़ देते वही श्रृंखला पाप की॥
पार्श्व तीर्थेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य कल्याण मन्दिर को पढ़ता रहूँ॥ 1240॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. उ**ज्ज्व**लं निर्मलं आपकी आतमा।
पूर्ण निर्दोष है नाथ शुद्धातमा॥ पार्श्व०॥ 1241॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्ज्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **ल**ब्धि नव क्षायिकी आपने प्राप्त की।
नाश कर कर्म को हो गए आप्त ही॥ पार्श्व०॥ 1242॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **हे** परम हितकरं नन्त गुण सागरम्।
तीन योगों से करता रहूँ अर्चनम्॥ पार्श्व०॥ 1243॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **म**न कहे दर्श कर लूँ अभी आपका।
अर्ज है पूरिये मम मनोकामना॥ पार्श्व०॥ 1244॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **रत्**न जड़ चाहता मैं नहीं आपसे।
तीन सम्यक् रतन चाहता आपसे॥ पार्श्व०॥ 1245॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **न**न्त जन्मों से मैं यूँ भटकता रहा।
अन्य द्रव्यों को अपना मैं कहता रहा॥ पार्श्व०॥ 1246॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **सिं**धु हो ज्ञान के बूँद इक दीजिए।
भक्त हूँ मैं खड़ा शर्ण में लीजिए॥ पार्श्व०॥ 1247॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सिं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. हारकर जग से दर आपके आ गया।
रूप अविकार जिन आपका भा गया॥
पार्श्व तीर्थेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य कल्याण मन्दिर को पढ़ता रहूँ॥ 1248॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. सर्व जानो तुम्हीं मम हृदय भावना।
मोक्ष-पद की रही बस प्रभो कामना॥ पार्श्व०॥1249॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नष्ट करके करम अष्ट गुण पा गए।
आप ही आप मेरे हृदय छा गए॥ पार्श्व०॥ 1250॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. स्वस्थ हो आप अविकार अमृतमयी।
राजते शाश्वता नाथ अष्टम मही॥ पार्श्व०॥ 1251॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मिथ्यामतियों को सद्ज्ञान दे तारते।
आपके सद्-वचन भव्य उर धारते॥ पार्श्व०॥ 1252॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हर समय आपकी धुन बनी ही रहे।
आपमें मेरी श्रद्धा घनी ही रहे॥ पार्श्व०॥ 1253॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. भय नहीं अब मुझे मौत का कुछ रहा।
मिल गए आप तो सब मुझे मिल गया॥ पार्श्व०॥ 1254॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. व्यक्त कर न सकूँ मैं व्यथा कर्म की।
आप सब जानते हो मेरे नाथ जी॥ पार्श्व०॥ 1255॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शिशु की प्रार्थना नाथ सुन लीजिए।
अपने मुक्तिमहल में बुला लीजिए॥
पार्श्व तीर्थेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य कल्याण मन्दिर को पढ़ता रहूँ॥ 1256॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. खण्डहर हो गए जो महल थे कभी।
ग्रन्थ कहते यहाँ शाश्वता कुछ नहीं॥ पार्श्व०॥ 1257॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. डिग न सकते कभी आप निज भाव से।
अर्चना मैं करूँ मन वचन काय से॥ पार्श्व०॥ 1258॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'डि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जिनस्तुति में मति मेरी हर पल रहे।
प्रार्थना भक्त की नाथ पूरी करें॥ पार्श्व०॥ 1259॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्वां नित्यं अहं अर्चना कर रहा।
है यही मेरा सौभाग्य जिनवर महा॥ पार्श्व०॥ 1260॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. आओ-आओ प्रभु मम हृदय में यहाँ।
आपके योग्य आसन को पावन किया॥ पार्श्व०॥ 1261॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. लोभ से वित्त संचय न कर दान कर।
अन्त में तुझको जाना है सब छोड़कर॥ पार्श्व०॥ 1262॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कर्म के जाल को काटना है प्रभो।
बन्ध नूतन मुझे बाँधना ना विभो॥ पार्श्व०॥ 1263॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. यन्त्र यह देह का जीव से चल रहा।
जीव है मुख्य पहचान इसको जरा॥
पार्श्व तीर्थेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य कल्याण मन्दिर को पढ़ता रहूँ॥ 1264॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तिमिरान्तक अरज मेरी सुन लीजिए।
आत्म-गृह का तमस दूर कर दीजिए॥ पार्श्व०॥ 1265॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रतिपति[1] आपके पास आ न सका।
ब्रह्म का तेज लख दूर से ही रुका॥ पार्श्व०॥ 1266॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भक्ति करके मुझे आत्म शान्ति मिली।
त्याग से आज आतम को तृप्ति मिली॥ पार्श्व०॥ 1267॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. सेतु बन शिवभवन के प्रभु आ गए।
आपको देख भव्यों के मन खिल गए॥ पार्श्व०॥ 1268॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'से' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. नर्क पशु देव मानुष गति में रुला।
आज सौभाग्य से जिन-चरण में रुका॥ पार्श्व०॥ 1269॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नवधा भक्ति से करता हूँ आह्वान मैं।
आगमन से प्रभु भक्त की शान है॥ पार्श्व०॥ 1270॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दंसणं णाण चारित तप साधना।
आत्म भावों से करता हूँ आराधना॥ पार्श्व०॥ 1271॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तप करें पर दिखावा कभी ना करें।
साधना गुप्त करके ही शिवसुख वरें॥ पार्श्व०॥ 1272॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. कामदेव

41. मुनिगण आप गुण का सु-चिन्तन करें।
शाश्वता मोक्ष में नाथ निज मग्न हैं॥
पार्श्व तीर्थेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य कल्याण मन्दिर को पढ़ता रहूँ॥ 1273॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नाथ उच्चैः विराजे हैं लोकाग्र पर।
दर्श कर लूँ मैं श्रद्धा नयन खोलकर॥ पार्श्व०॥ 1274॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्चैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चाह कुछ भी नहीं देह सुख की प्रभो।
नाथ भक्ति से पाऊँ मैं सिद्धि विभो॥ पार्श्व०॥ 1275॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मीत कोई नहीं जग में मेरा यहाँ।
आप सर्वस्व हैं छोड़ जाऊँ कहाँ॥ पार्श्व०॥ 1276॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कण्ठ अवरुद्ध ना हो मरण के समय।
नाम लूँ आपका भाव हों धर्ममय॥ पार्श्व०॥ 1277॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. राग औ द्वेष से मैं झुलसता रहा।
दर्श कर आपके मैं सँभलता गया॥ पार्श्व०॥ 1278॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. इंद्रियाँ मन के विषयों से विरति सदा।
ऐसे जिनदेव को मैं नमूँ सर्वदा॥ पार्श्व०॥ 1279॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शिवपथिक बन वरी आपने शिवरमा।
नाश की आपने कर्म की कालिमा॥ पार्श्व०॥ 1280॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रम रहे आप अपने में आनन्दमय।
पर से निर्लिप्त हैं कर्म पर कर विजय॥ पार्श्व०॥ 1281॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सीख कर आपसे आपसा मैं बनूँ।
आप पद-चिह्न पर चल करम को हनूँ॥
पार्श्व तीर्थेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य कल्याण मन्दिर को पढ़ता रहूँ॥ 1282॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वश किए आपने सारे अक्ष[1] विषय।
हो गए नाथ अतएव सुख ज्ञानमय॥ पार्श्व०॥ 1283॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नम्र बनकर सदा तव निकट में रहूँ।
आत्म उपयोग मैं आप सम्मुख रखूँ॥ पार्श्व०॥ 1284॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वासना से अभी तक दुखी हो रहा।
आतमा में करम भार को ढो रहा॥ पार्श्व० ॥1285॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. पादाम्बुज में वसु द्रव्य अर्पण करूँ।
दूर कर पाप आस्रव परम सुख वरूँ॥ पार्श्व०॥ 1286॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वायु सम ही निसङ्ग रहें साधु-जन।
वीतरागी प्रभु को नमें सर्व-जन॥ पार्श्व०॥ 1287॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. हंस मोती चुगे भक्त जिनवच चुने।
सर्व द्वादश सभा तत्त्व चर्चा सुने॥ पार्श्व०॥ 1288॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

स्वर्ण निर्मित सिंहासन रतन से जड़ा।
श्यामवर्णी प्रभु उस पे शोभे महा॥
कृष्ण घन[2] लख मयूरा ज्यों नृत्य करे।
पार्श्व जिन देख भक्ति से अर्घ्य धरे॥ 23॥

ॐ ह्रीं श्रीं पीठत्रयनायकाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

1. इन्द्रिय 2. बादल

श्लोक नं॰ 24

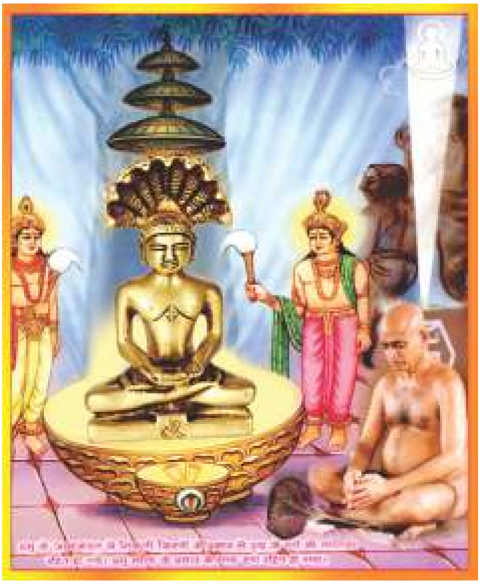

भामण्डल प्रातिहार्य

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन
लुप्त -च्छद - च्छविरशोक - तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥ 24॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

साँवलिया पारसप्रभु की तन आभा अति न्यारी।
भामण्डल से अशोक तरु की पल्लव छवि हारी॥
दबी लालिमा उन सबकी वे पत्र लाल जो थे।
छोड़ चुके सब रंग स्वयं का तव प्रभाव से वे॥
कौन सचेतन तव सन्निधि से राग रहित ना हो।
निश्चित ही उसके जीवन में वीतरागता हो॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 24॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं।

विडादिरहितान् धीरान्, यतींस्तप्ततपोऽन्वितान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. **उद्दण्ड नहीं बनना है, जिनवचनों को सुनना है।**
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1289॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'उद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **गन्धोदक शीश लगाऊँ, आतम स्वभाव प्रकटाऊँ।**
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1290॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **स्वच्छन्द नहीं होना है, आतम स्वतन्त्र करना है।**
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1291॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्छ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **तारो मुझको जिनरायी, है विभाव अति दुखदायी।**
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1292॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **तलस्पर्शी ज्ञान तिहारा, सब लोकालोक निहारा।**
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1293॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **वसुधा सारी हर्षायी, प्रभु जन्म लिया अतिशायी।**
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1294॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **शिवपथ पर चलकर अविरल, पाया सिद्धालय अविचल।**
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1295॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तिथि मानी वह मङ्गलमय, गर्भादिक कल्याणक मय।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1296॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. द्युति जिन तन की सुखकारी, भवि जीवों की तमहारी।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1297॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तिमिरान्तक आप जिनन्दा, मम मिटे मोह के फन्दा।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1298॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मण्डित प्रभु नन्त गुणों से, हैं विमुक्त सब दोषों से।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1299॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. डगमग डोले है नैया, तुम ही हो नाथ खिवैया।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1300॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ड' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. ले लो प्रभु मुझे शरण में, करता हूँ नाथ अरज मैं।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1301॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ले' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नक्षत्र विशाखा प्यारा, जन्मे त्रिभुवन जिनराया।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1302॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. लुक् धातु अवलोकन में, जीवन बीते दर्शन में।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1303॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तप्तादिक ऋद्धि पाई, फिर अक्षय सिद्धि पाई।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1304॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. स्वच्छांगन किया हृदय का, आह्वान करूँ जिनवर का।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1305॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्छ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. दस दिशा गूँजती जय से, प्रभुवर की कर्म विजय से।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1306॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. मैं तुच्छ ज्ञान का धारी, सर्वज्ञ प्रभु हितकारी।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1307॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्छ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विचलित ना होऊँ पथ से, शिवपुर जाऊँ जिनरथ से।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1308॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रस पीकर निजानुभव का, बन्धन तोड़ा भव-भव का।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1309॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. शोषक हो भवसागर के, पोषक हो भवि जीवों के।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1310॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कमलासन अधर विराजे, शुद्धातम में प्रभु राजे।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1311॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तप तेज आपका भारी, प्रभु अष्ट कर्म क्षयकारी।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1312॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. हे गुरुर्ब्रह्मा शङ्कर, कहता है जग क्षेमङ्कर।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1313॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रुर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. बहती है ज्ञान सु-धारा, प्रभु नाशी कर्म की धारा।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1314॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भूला स्वभाव भव-भव से, अब आया हूँ तव दर पे।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1315॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. वसु याम करूँ प्रभु चिन्तन,अर्पण है मम जीवन धन।
जयवन्तों पारस स्वामी, मैं बनूँ आप पद गामी॥ 1316॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. सावन का जब महीना था,प्रभु सिद्धालय पाया था।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1317॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सन्निकट आपके आऊँ, फिर लौट कभी ना जाऊँ।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1318॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. आराध्य मेरे तुम ही हो, प्राणों के प्राण तुम्हीं हो।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1319॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तोरण सब द्वार बँधाए, प्रभुवर की आश लगाए।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1320॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. एकाऽपि समर्थ सु-भक्ती, दिखलाए डगर मुक्ती की।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1321॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. यशगान करें सब प्राणी, जय-जय जिनवर सुखदानी।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1322॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. दिग् दिगन्त फैली महिमा, प्रभु की अनुपम गुण गरिमा।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1323॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. वाञ्छा कुछ रही न मन में, प्रभु बसिए भक्त हृदय में।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1324॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तस्वीर देख जिनवर की, स्मृति आती निज आतम की।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1325॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. वश करके चार कषायें, प्रभु आठों कर्म नशायें।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1326॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वीरान लगा जग सारा, जब पाया प्रभु का द्वारा।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1327॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तन्मयता से भक्ति कर, बनना है अब मुक्ति वर।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1328॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रागी सुख कभी न पाता, वैरागी दुख क्षय करता।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1329॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. गन्तव्य न दिख पाता है, तब भक्त तुम्हें ध्याता है।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1330॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नीले प्रभु नयन कमल हैं, तन परमौदारिक मय है।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1331॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. रात्रि हो या फिर दिन हो, हर पल प्रभु का सुमरन हो।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1332॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गति-आगति रहित जिनेश्वर, पंचम गति के परमेश्वर।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1333॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. जगतां पूजित जिनरायी, तन की कान्ति अतिशायी।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1334॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सुव्रत को पाना चाहूँ, अतएव शरण तव आऊँ।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1335॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जलता आतम कर्मों से, लौ लगी नाथ चरणों से।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1336॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिहुँलोक चराचर देखा, पहले स्वातम अवलोका।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1337॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. कोई न शरण है दुख में, प्रभु आप शरण सुख-दुख में।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1338॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नहीं नया जगत में कुछ भी, प्राचीन वही सब वह ही।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1339॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सर्पाधिराज[1] आया था, प्रभु-पद में स्वयं झुका था।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1340॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. चेतो चेतन प्रभु कहते, क्यों काल अनादि सोते।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1341॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तत्त्वोपदेश प्रभु करते, भवि जीव लीन हो सुनते।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1342॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नोकर्माहार करे हैं, हो पुष्ट सु-सिद्धि वरे हैं।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1343॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. कोऽपि न जगत में अपना, स्वातम अपना सब सपना।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥ 1344॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु तन की आभा न्यारी, तरु की पल्लव छवि हारी।
हैं वीतराग गुणधारी, प्रभु शत-शत ढोक हमारी॥
चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ, कब अनर्घ्य पद को पाऊँ।
हे पार्श्वनाथ उपकारी, मैं आया शरण तिहारी॥24॥

ॐ ह्रीं श्रीं भामण्डलमण्डिताय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

1. धरणेन्द्र